1. GRAIRAVĀGNI- YAJĀRA-VIDNI

1. SIRĀ HUTĪ VĪDHĪ

NEPALGERMAN MANDJECRET PRESERVATION PROJECT

Files of Dienei-Rāra Karapā ČĀ ĀRĀR.: EMPTINDE MĀLO

Menstern No.

TITLE (est. in Colohom(Callopu))

ĀDAU—Ĵ ATHA BHAIRAVĀGNI(—YAGYA—ĀRAMBHAM

KARI KJĒTĒ (I HOMA PĪMDĀNĒ ŠILOHO MA-YĀYA-VĪDHĪ)/

2. ĪTĪ ŠIRA HOMA-PĪMDĀNĒ ŠILOHO MA-YĀYA-VĪDHĪ/

2. ĪTĪ ŠIRA HOMA-PĪMDĀNĒ VILOHO MA-YĀYA-VĪDHĪ/

2. ĀRĀPTĀH, 3.ĪTĪŠIRĀ HUTĪ VĪDDHĪ I SMĀPTĀH.

MITHOR!

No. of Never: 39 Geomet Sire in cm 38 4 × 11 2. Emil No. I. 24

Dau of simmet: 74 9 79 Sorie — Dyfas,—Nevert—Tipha—Jaktātī

Ramatis pēft—Tipungha—pās Jā Loughad by woma—tim-traista—malaba—timlas

SCRIBĒD: TAYANTA RĀJĀ

प्राचम् मह केथ्र भाग गढ़ कर्ड दे के कुन भी व

स्तिम् । अस्ति । जनसम्बादित्यः । प्राप्ति ।

क्षायायिकागदात्र मारिश्ति लक्ष्तय्याद्धश्चित्रणात्यया दैर माज्यास्तिस्य विकार विकार स्थानित्र स्यानित्र स्थानित्र स्यानित्र स्थानित्र स

महित्या जिस्सा निवास निवास के स्वास के

ट्या प्रमान के त्या स्त्र विकास स्त्र मा स्वास्त्र स्वास स्

विवशास्त्रीशाव तीन विवस्त्र प्रभाग ने स्वाप्त के विवस्त स्वाप्त स्वाप

प्रवस्तावयास्या त्रां प्रिक्त त्रां विश्वस्त्र ता आसी त्रां म्यान वा विश्व व्या व्या विश्व व्या व्

तयतम् । विश्वास्त्र । विश्वास्त्य । विश्वास्त्र । विश्वास

वायामस्मा क्रम स्वासाख्यां त्या त्या स्वास्य स्वास्य में स्वास्य स्वा

के नम्मी महार नवाया। ॥ मिहार नम्यान॥ ॥ महार वी मार नक्ष ॥ मुख्य मुख्य नामनि॥ अव नम्मार्थिक ला॥ ॥ मुय्य गार्थकान्य ॥ कन्य भारती कि म्रायह है। जी हर याय नमा जी शिन्य स्व हाल शिकायवाद । क्रिक वनाय की क्षान्य विस्त्र मार्थका मुख्य के प्रमाण कर निवास कर मुख्य के प्रमाण कर के प्रमाण

make a market of a first to the form the first to the fir

विस्ता माथ क्रिका की उन्हें विविध्या प्रमान की स्विध्या प्रमान की की स्वाप्ता की की स्वाप्ता की की स्वाप्ता की स्

नमाक्ता त्वर प्रथंत । स्मान्द्रां व्हेलिय संस्कृत साला नाम ता स्त्र यान ता पे जो क्रय स्त्र विश्व स्त्र स्त

चिकायनमान्त्रसङ्ग्रमीभेषाउन्ताणिकानस्य अने । यस साई जो मा सबसीय खोल नेत्वियं तमा वाय्वमा दे जांधवत्वायतमा दे जावाक्र यूवाय क्षिय्वादया। उजी जी के स्वान्त्र त्येत्र त्येत्र त्यायस्व के लीय तत्रीमें मागाध्यती नत्रापां के कार्यों में के बीच मागा करा क्या तो के के न भी प्रापा में कार्य प्रवासी के कि लाइवी, एड् माना मर्के नामित्र जा मकवका च कित्व विरूप्तां मित्री विषय विरूप्तां कि विरूप्तां कि वती। हेवा वा आया मारा में विकास का मारा में का निवास के मारा में का निवास के में का निवास के मारा में मारा में का निवास के मारा में मारा में मारा मारा में मारा मारा में मारा में मारा में मा यायत्वसाळ्योपि अदे नस्यूष्ठ ॥ त्यात्रिमिनायायावायान्यान्यत्वस्य वस्त्रमा यामञ्जूष्ठ वस्त्र जिति ताचा थते रत्य का नित्र गांका ति ना का या वंत्र गाय के से वा विषय पाय रहें कि वि

करमल्देनवार्यतम्। तिनिक्रंशास्यार्थः के म्हायस्र । स्क्रावद्गार्थिके स्वामार्थिके द्वयात् । । त्रभाक् काटा चितिका याच सा लाम् ११। मठा ।। । वेदके मठा का का का विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व र्द्रञ्जोक्रिया विभियह वयाय त्रांता कृत्वादि। विशेषिक समृद्धा विभिन्न विभिन्न वकानिकाक्षत्रताय। एका भिन्ना के की वामाया भिया महामुख्या कर विश्व के विश्व के विश्व के विश्व के विश्व के विश्व मता के में र बीवें किस बार बेरे में स्वार के र साथ र साथ के नियं से साथ र यक्रमीविष्रेक्को स्तित्रधाते राजवक्रयो। उन्दे मुसायर ध्वयाक्राभियद्वर हो तथा विद्यानीय विशेष्ट्रताम् त्येष् अविवितिनिक् अपि। चगुरी स्नास्,। बिष्नामि। के सी श्रीभरागण। भी

स्तिभाद्यात्र व्यवस्ति यात्र प्रधानम् । अस्ति व द्वारात्र । प्रधानम् । स्वति । स्वति

वक्षायतमाय इता के के हिस्या यहा हो। ति स्वक्षित्य या इंग्रही स्वया यहा वितय गान । ति वितय गान प्रति । ति वित्र प्रति वित्र प्रति । ति वित्र प्रति । ति वित्र प्रति वित्

तार्विधिकापतार्ङ्ज क्रिक्षायतमाक्षेत्रीयिष्ठित्रिण के क्रिक्ष सक्त यन मार्ङ क्रिक्ष स्मार्ङ क्रिक्ष स्मार्ङ क्रिक्ष स्मार्ङ क्रिक्ष स्मार्ङ क्रिक्ष सम्मार्ङ क्रिक्ष सम्मार्ङ क्रिक्ष सम्मार्ङ क्रिक्ष सम्मार्ङ क्रिक्ष सम्मार्ङ क्रिक्ष सम्मार्द्ध स्मार्थ क्रिक्ष सम्मार्द्ध सम्मार्थ क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष सम्मार्थ क्रिक्ष क्

उद्वित्व वायनप्राम्मार्क को रहक कर पालाय तमार्क को विप्ता के कक्ष का वाय तमार्क को क्रिये व स्क्रिया स्येनमार्क को अवेपा स्क्रिया साय तमार्क को का स्क्रिया साय तमार्क को किन्य पास्य ममार्क को अवेपा स्क्रिया साय तमार्थिक को क्ष्र कुति। श्राक्त को क्ष्र किन्य समार्थिक के किन्य सम्मार्थिक को के स्वाय तमार्थिक को के स्वाय तमार्थिक को के स्वाय तमार्थिक के किन्य स्वाय तमार्थिक के स्वाय तमार्य तमार्थिक के स्वाय तमार्य तमार्थिक के स्वाय तमार्थिक के स्वाय तमार्थिक के स्वाय तमार्थिक के स्वाय तमार्य तमार्थिक के स्वाय तमार्य तमार्य तमार्थिक के स्वाय तमार्य वात्व उर्वी यू व का तेव उमान ते। ई स्यात्व विस् वे ए ध क छ की म सुरी। च की विद्या ये वे की विस् ये वे कि विस् ये कि कि विस् ये कि कि विस् ये कि कि विस् ये कि वित् ये कि विस् ये कि वि

दवक्ष तथियक छुर्व ॥ जे की ज्ञास व्याप्त भाव स्वाप स्व

मकार्य में इति व्याय बांबा कारी के सिष्यं में स्वाय ब के संयो क्षा खा। खत विद्वा है स्वाय कि स्वाय के स्वयं के स्वाय के स्वयं के स्वाय के स्वयं के स्वाय के स्वयं के

म्राचीताला जिल्लियं ते ज्ञान श्री भी अधिक स्थान स्यान स्थान स्थान

याजानायनामन्यां विद्याचाविततायावित्रताणि द्वीदितामस्वायम् यामास्वाद्यां विनेत्रत्यिति विनेत्रत्यां विनेत्यां विनेत्रत्यां विनेत्यां विनेत्रत्यां वितेत्रत्यां वितेत्रत्यां वितेत्यां वितेत्रत्यां वितेत्रत्यां वितेत्रत्यां वितेत्यां वितेत्रत्यां वितेत्यां वितेत्यां वितेत्यां वितेत्यां वितेत्यां वितेत्यां वित

त्माय ईत अधिका विदेश ज्या ये देश ये किया है। विदेश हैं के क्षेत्र के क्

का यक्ष प्रयामक । ज्या विद्या स्वाप स्वाप के स्व या दा त । के उत्तर के स्वाप के स्

स्राप्त

दिनयेक्राञ्च मनस्यात्रास्त्र व्यक्तिस्त्र स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्थान

यवक्या ने देव पर्का ना निकार विवास युष्या पन सर्व का ने दिसि दिसा में स्वान के द्वा कि विवास के का निकार के स्व स्वास के दिसि परिकार के स्व स्वास के स्व सिंह में स्व सिंह में स्व सिंह में सिं

नामित्याधिवश्वस्त्रवाकु स्थान साम् ॥ श्रीयकाद्वा स्थित्य स्वाद्वा क्षेत्र प्रद्वी क्ष्मी स्वाद्वा । स्वाद्वा स्वाद्वा स्वाद्व स्वाद्वा स्वाद्व स्वाद्व स्वाद्व स्वाद स्

वितानी साहा। श्रीष्ठा भागाणिति तवदनी तंत्र साह नवा भाग मुस्विल्गाम स्रिया ने । यो गाम्य गांव त्र हा निस्त् व दला मात्र स्थान । यो गाम्य गांव त्र हा निस्त् व दला मात्र स्थान । यो गाम्य भाग मात्र । ॥ भाग स्थान हा हिंदा है वर्ष मात्र कर में स्थान । यो भाग माय्य प्राप्त में यो भाग माय प्राप्त में यो भाग माय्य प्राप्त में यो प्राप्त में यो भाग माय्य प्राप्त में यो भाग माय्य प्राप्त में यो प्राप्त में यो भाग माय्य प्राप्त में यो प्राप्त में यो भाग माय्य प्राप्त में यो प्राप्त

that they wanted think to have -

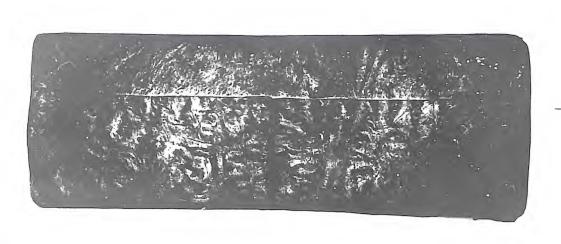
मञ्चवदन ने मानिद्रामित्राणिय स्थार्क महर भाम नी म्या ए दे त्व वस्त माविद् नारिस मान कु स्व मानिद् नारिस मान कु स्व मानिद् नारिस मान कु स्व मानिद् नारिस मान मानिद्र मानिद्र मानिद्र मानि मानि मानिद्र मानिद्र में मानिद्र मानिद्र में मानिद्र मानिद्र

A STATE OF THE PARTY OF THE PAR

पैवनानाया। श्री प्रकार या या विष्ठ (पा स्म धेना पा स्वाया स्वाया प्रवाद प्रवाद

त्व मल्या या यस ल म क बां या। भी मां कृति विसे रिंग कि तव शाव का मां दि द ॥ या मिन ॥ या या मां कि मां कि कि से कि कि कि से कि मां कि का मां के कि से कि मां के कि मां कि का मां के कि मां

वह नहीं अवादिशाय व वश्या गरून है। तार राज्य के कि स्वाद के कि स्



पात्र क्षिण क्षिण के इन्हें के बार क्षिण के स्व के

वस्ति विद्यास्ति ते साति विश्व ते त्रावाणिती॥ ॥ मास्य द्रिष्ट्र वस्ति स्त्रा स्त्री हित्र भी निर्देश वस्ति है। वस्ति वस्ति हित्र भी निर्देश वस्ति है। वस्ति वस्ति है। वस्ति वस्ति है। वसि है। वसि

त्रभ्या हो। । । ज्वकेष्णुनी कार्य स्वाद्य क्रिया विश्वा मध्य क्रिया विश्व क्रिया हो। । । विश्व क्रिया क्रि

मितिकाता महिता के की गड़ है। ति माई ती म नाद कि लिकि लिय म ना मिति की की ली मान की की ली निक्स त्रवर यह में देर म न न मानि। या हा। इ. ॥ । है मिति की लिए में माने प्रति माने पिति की ले माने कि लिकि की ले माने कि कि लिकि के मिति क दशपक्र त्र है नविवास्क के क्री के स्वाद के स्वरंग कर में स्वरंग के सभामित्र के स्वरंग के सभामित्र के समामित्र के

हारि। हैं क् से ए हेरे नवाय खा हा। । अयु श्राविद्विति द्व यु म न स्ट्री स्व ल्या न स्ट्रि स्व ल्या स्व सिंहा का सिंहा क

ात्रिक्षणार्डं व क्रियाय खाद्या गांक क्रियाय खाद्या हार क्रियाय खाद्या हार्य प्रमान क्रियाय क्रियाय क्रिया हार्य प्रमान क्रियाय क्रियाय क्रिया हार्या हार्या गांक विद्या क्रियाय क्रियाय

हाम प्रकार के अन्य प्रकार के स्वार के स्वर के स्वार के स

उत्तर प्राय या का एक साम उत्तर का माना कि की प्रवक्त निष्ठ मान बात के स्वार के की कि की क

उर्वश्चिमित्रहु बाह्यावर्वान् उपम्मा वायावाहित्वरहुयामा निकान उम्म विविधार्म कि से ने बाह्या विविधार्म कि से ने बाह्या विविधार्म कि से ने बाह्या विविधार्म के से में बाह्या विविधार्म के से बाह्या के से बाह

राष्ट्रायाच्यात्र व्याप्ति प्राप्ति विकास विकास विकास विकास मिला स्वाप्ति विकास वितास विकास वितास विकास वितास विकास वित

तातायश्चार्णावाय्वा। दे के तक्ष्य स्व श्वाराण सर्थ कर प्रात्रण । वहुँ को त्रावि राश्यारण त्राय प्रात्र । विद्य प्रात्ते स्व श्वार्णावाय वा दे के कि यो स्व राश्या है के कि यो स्व राश्या है के स्व राश्या है के कि यो स्व राश्या है के स्व राश्या है स्व राश्य ह

ला है जीविह स्विधवाला। है जी तास्विध सादाति। है जी में शिवाला में से दिन है जी वह स्विध सादाति। है जी वह स्विध सादाति। है जी वह से सादाति। है जो के सादाति। है जो के सादाति। जो के

विक् सर्वता निर्वह नादि॥क न्यारिषक म् (म्मकारिज्ञाधार्विक म्याक्ति भया। ॥ गुरु एवं ह नी। ॥ विक् विका है विना । । गुरु एवं ह नी। । विका होयो। देव कि मानि भाग माने स्वाप के त्याप देव हैं ने। विका के विश्व । विका के विश्व । विका के विश्व । विका के विश्व । विका विश्व हैं ना श्री । विका विश्व हैं ना श्री विश्व हैं ना स्वी हैं ना स्वी हैं ना स्वी हैं ना स्वी विश्व हैं ना स्वी विश्व हैं ना स्व

गावा स्विद्धा अयो अविद्या विश्व वार्ष्य भारता है। विद्या स्विद्या अविद्या के स्विद्या के स्विद्य के स्वित के स्विद्य के स्विद्य के स्विद्य के स्विद्य के स्वित के स्वित क

तकद् जी ग्रह गम शिह में स्य मा शर्व ना उपा ए जा जा शिक्ष श्रेण दिन कर यह जा वाद से शोजि है जा सा स्वेद वा स्व व से से हिंदी है जो ह

किया न्यक्ति व गुलाव कार्या महिया वास्ति कार्य का कार्य हरे रहे स्व जाव कार्या व कार्य कार्य के विश्व कार्य का अवस्था के प्रति के कि व कार्य कार्य के आया कार्य के प्रति के कि व कार्य कार्य कार्य के विश्व के कार्य कार्य के कार्य कार्य के कार्य के कार्य के कार्य कार्य के कार्य कार्य के कार्य कार्य के कार्य के कार्य के कार्य कार्य के कार्य कार्य के कार्य के कार्य के कार्य कार्य के कार्य कार्य के कार्य कार्य के कार्य के कार्य कार्य के कार्य के कार्य कार्य कार्य

विभाज अन्न मनमान साउँ ये ह्न मर्द्ध यस मझ नदा विदेश है स्व तम है स्याग मिव सी मर्विसे प्रक्रिय हिर स्व सम्बद्ध सम

वित्रभू॥ ॥ मुक्षम् म्यां स्मानिकित्रहाययमा न स्पृत्ति स्वानिकित्र मार्थिक भी स्वानिकित्र स्वानिकित्य स्वानिकित्र स्वानिकित्र स्वानिकित्र स्वानिकित्र

काविधि र सीत्रभूतक् ॥ श्राप्त हा द सामा सम्द्रक तय जामा साह में प्राप्त भागा में जामा स्वाप्त में प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त के प्राप्त में प्रा

विता तहा। गर् केंड क्री क्रिक्त न्वाय क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त । गर्व न्या वालाव स्विक्त क्रिक्त क्रिक क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त

दम्भित्वदवदवीमा वाह्य। मून्याशियाते॥ गार्वी शामिह्न्य की श्वाक्तार एम् वर्ब की या वाह्य की श्वाक्ता है। मून्य की स्वाक्ता है। मून्य

वार्वा। निवस्त विश्व के स्वाहित स्वाहित स्वाहित स्वाहित के स्वाहित के स्वाहित के स्वाहित स्वा

व्या व्यादि । यद्व व्याप्तम् अ ६ व्याप्त अ । उद्वाप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व स्व इत्याप्त व्याप्त व्याप्त

माहानाध्यतवास्ता भार्यक्षत्र वाह्य क्षेत्र वाह्य क्षेत्र वाह्य क्षेत्र क्षेत्

